पुष्टिमार्ग के नियम:

1. हमारे संप्रदाय का नाम **पुष्टि मार्ग** है
2. 'हर वैष्णव के प्रमुख गुरु **श्रीमद वल्लभाचार्य महाप्रभुजी** है
3. श्री महाप्रभुजी का हर वंशज है 'गुरु' द्वार, वे प्रतीक 'उसे गुरु के रूप में' अर्थ है.
4. गोस्वामी जिसे हम 'ब्रह्म'संबंद्य दीक्षा ले लिया है से हमारे गुरु है.
5. ब्रह्म संबंद्य दीक्षा किसी विशेष गोस्वामी से किया गया है लिया जा सकता है, हर तरह से करना चाहिए, महाप्रभुजी के हर वंशज दिया बराबर संबंध है और वैष्णव द्वारा गुरु के रूप में पूजा हर तरह से की जानी चाहिए.
6. 'नामनिवेदन' करने के लिए किया गया है, जब गुरु तीन बार 'अष्टाकक्षर' मंत्र बताया है और यह दीक्षा लेने के लिए व्यक्ति द्वारा तीन बार दोहराया और फिर गुरुसे एक तुलसी माला जो सब पर पहना ही होना चाहिए पहनने के लिए कहा जाता है
7. 'ब्रह्मसंबंद्य' या 'आत्मा' निवेदन मंत्र' बताया दिया जाता है जब एक अपरेस में स्नान और हाथों में तुलसी के साथ 'गद्य मंत्र', के रूप में ठाकुरजी के सामने गुरु से कहा जाएगा. फिर, तुलसी के पत्तों प्रभु के कमल पैर में रखने की पेशकश कर रहे हैं
8. पुष्टिमार्ग में केवल श्रीमद वल्लभाचार्य के पुरुष गोस्वामी विशेष को अष्टाकक्षर मंत्र और ब्रह्मसंबंद्य दीक्षा देने के योग्य हैं. गुरु की परंपरागत सीट पर चेलों और इसलिए पारित नहीं किया गया है, दीक्षा एक विशेष पुरुष गोस्वामी से ही लिया जाना चाहिए.
9. कई लोग, गलती से 'के रूप में' अप्वास लेकिन सही शब्द 'है' उपवास. अप्वास का उल्लेख करने के लिए नरक में रहते हैं 'और' उपवास मतलब निवास करने के लिए इसका मतलब है भगवान के पास. इसलिए सही शब्द 'उपवास इस्तेमाल किया जाना चाहिए.
10. अष्टाकक्षर मंत्र और ब्रह्म संबंद्य दीक्षा के बाद, एक वैष्णव ले 'कह जय श्री कृष्ण' द्वारा प्रत्येक वैष्णव को नमस्कार करना चाहिए.

11. एक वैष्णव को एक पत्र लेखन में, एक 'ग्रीटिंग जय श्री कृष्ण' का प्रयोग करना चाहिए. भले ही वैष्णव हमारे रिश्तेदार और हम से अधिक पुराने, 'जय श्री कृष्ण' है बातचीत में इस्तेमाल किया जाएगा.
12. एक गोस्वामी को नमस्कार करने के लिए 'जय श्री कृष्ण' कहने की परम्परा नहीं है. कारण यह है कि एक सेवक के लिए गुरु को स्मरण भगवद व्यक्त पात्रता नहीं है.गुरु की कृपा के माध्यम से, सेवक ने स्मरण प्राप्त किया है.
    गोस्वामी से बैठक में ,एक दंडवत कहना चाहिए. एक 'साष्टांग दंडवत प्रणाम' पत्र लिखने में लिखा जाना चाहिए,फोन पर भी अन्य मामलों के बाद मेरी 'साष्टांग दंडवत प्रणाम' फोन पर बात की जानी चाहिए.
13. पंचांग दंडवत ठाकुरजी से पहले किया जाता है और साष्टांग दंडवत' गुरुदेव से पहले किया जाता है.
14. महिलाओं दंडवत साष्टांग मत करो
15. एक गुरु या किसी भी गोस्वामी के नजदीक जाने से पहले, हमे पहले कहना चाहिए 'दंडवत और फिर प्रणाम करते हैं. इस के बाद, पूछना 'चाहिए? जेजे, मैं चरण स्पर्श ले सकता हु'? अनुमति प्राप्त करने के बाद, एक दाहिने हाथ के साथ दोनों पैर छूने और उसे अपनी दोनों आँखों ,माथे और दिल से लगाना चाहिए.
16. एक गोस्वामी कि सेवा में या किसी भी काम में दो हाथ की आवश्यकता नहीं है, केवल बाएं हाथ का प्रयोग करना चाहिए. तदनुसार, पैर छू ने के लिए दाहिने हाथ के साथ ही किया जाता है.
17. ठाकुरजी और गुरुदेव के पैरों का चरण स्पर्श निम्नलिखित तरीके से किया जाता है. लेफ्ट हैण्ड को राईट हैण्ड की फोरेअर्म निचे की स्थिति तहत रखें और राईट हैण्ड की सही हथेली के साथ, बहुत धीरे बाएं, दाइ और बाएं पैर का चरण स्पर्श करना चाहिए .
18. गुरु के सामने हाथ ऊँचे करके बोलना और बैठना नहीं चाहिए.एक गुरु की ओर बढ़ाया पैरों से नहीं बैठने के लिए और भी उसके पीछे उसकी पीठ के साथ नहीं बैठना चाहिए. एक उसके नीचे गुरु गद्दी या कपड़े का प्रसार स्पर्श नहीं करना चाहिए. एक पैर ऊपर की स्थिति में नहीं रखा जाना चाहिए या किसी भी अन्य अनुशासनहीन तरीके से. एक एक सभ्य तरीके से पार पैर और विनम्रता के साथ हीं बैठना चाहिए.

19. एक हर समय सावधान रहना है कि एक पैर गुरु गद्दी, तकिया, कपड़े कभी नहीं छूने चाहिए, बिस्तर या उसकी कोई भी प्रसार को स्पर्श नहीं करना चाहिए .
20. जब गुरु एक उच्च स्तर पर बैठा है, एक ही स्तर पर नहीं बैठ लेकिन एक निचले स्तर पर बैठना चाहिए. यदि गुरु एक कुर्सी पर बैठा है, एक कुर्सी पर नहीं बैठना चाहिए. एक अच्छी तरह से सीखा व्यक्ति, रॉयल्टी या किसी अन्य उच्च पदस्थ
व्यक्ति को गुरु उपस्थिति में आत्म महत्व के एक दृष्टिकोण को नहीं रखना चाहिए.
21. एक हवा है गुरु उपस्थिति में पारित नहीं करना चाहिए. एक गाना या फिल्मी गीतों या अन्य ऐसी बातें गुरु उपस्थिति में हमें नहीं करनी चाहिए.
22. गुरु की उपस्थिति में रहते हुए, वैष्णव घर के मामलों में या किसी अन्य सांसारिक मामलों पर चर्चा नहीं करनी चाहिए, लेकिन वे केवल महत्व भगवद संबंधित मामलों पर चर्चा करनी चाहिए.
23. गुरु की उपस्थिति में,किसी अन्य व्यक्ति को शिक्षाओं और आशीर्वाद नहीं
देना चाहिए. गुरु की उपस्थिति में रहते हुए, किसी भी अन्य व्यक्ति भी अगर व्यवहार परिवार या अन्य सांसारिक संबंधों के अनुरूप है तो भी पैर नहीं छुना चाहिए. भारतीय शास्त्रों की परंपरा के अनुसार, जबकि गुरु उपस्थिति में, केवल उनके लिए
ही पूजनीय भावनाओं को दिखाया जाना चाहिए.
24. गुरु की उपस्थिति में, एक जाने से पहले अनुमति लेनी चाहिए.
25. एक निम्नलिखित परिस्थितियों में शुद्ध बनने के बिना गुरु के लिए नहीं जाना चाहिए:
- मासिक अवधि में एक महिला तीन दिन के लिए नहीं जाना चाहिए.एक 'की अवधि' के दौरान शुतक नहीं जाना चाहिए.यदि एक शौचालय में चला गया है, एक स्नान लेने के बिना नहीं जाना चाहिए.प्रसव के बाद, एक औरत को 40 दिनों के लिए नहीं जाना चाहिए.एक मृत शरीर को छू या अंतिम संस्कार में भाग लेने के बाद, एक शुद्ध बनने के बाद ही जाना चाहिए. अगर यह दिन के समय के दौरान हुआ है, एक अपवित्र है जब तक रात में तारे दिखाई देते हैं और अगर यह रात के समय एक है सूर्योदय तक अशुद्ध है.
26. यह वैष्णव के लिए अनिवार्य है कि हर समय एक तुलसी माला पहनते हैं. मामले में तुलसी माला टूट गयी है, एक दूसरी पहने तक भोजन या पानी नहीं लेना चाहिए. इस 'पद्म पुराण' नामक ग्रंथों में दी गई शिक्षा है, जहां यह कहा है कि एक वैष्णव के लिए,

खाना एक तुलसी माला पहने बिना लिया मलमूत्र करने के लिए तुलनीय है, पानी मूत्र और अन्य तरल पदार्थ ले लिया करने के लिए तुलनीय है खून करने के लिए तुलना कर रहे हैं. अगर एक वैष्णव एक पल के लिए भी एक माला तुलसी के बिना है, वह विष्णु की एक दुश्मन है और इसलिए यह एक हर समय पहनना चाहिए हो जाता है.

27. एक तुलसी माला पहने बिना प्रभु सेवा नहीं कर सकता. यह परिवार के हर सदस्य के लिए अनिवार्य है सेवा में भाग लेने के लिए एक तुलसी माला पहनते हैं.
28. महिलाओं और लड़कियों को मासिक अवधि में तीन रातों के बीत के बाद, स्नान साबुन के साथ अपने बाल धोने, या हर्बल शैम्पू शैम्पू सभी तेल को दूर करना चाहिए, पुराने तुलसी माला को हटाने और सेवा करने के लिए लौटने से पहले एक नया एक पहनते हैं. एक पुरानी तुलसी माला पहने सेवा नहीं कर सकता.
29. निम्न परिस्थितियों में एक स्नान लेने के बाद एक नई तुलसी माला पहनने चाहिए: - जब शुतक की अवधि या वृद्धि की समाप्ति है.जब अशुद्ध वितरण अवधि के बाद पारित कर दिया गया है और एक स्नान है.एक अगर शुतक में एक व्यक्ति को छुआ है.एक अगर एक मृत शरीर को छुआ है.अगर एक जलती हुई शवों की जगह पर चला गया है.अगर एक मासिक अवधि में एक महिला को छुआ है.एक अगर एक औरत जो 20 दिन या एक नवजात शिशु तक 10 दिनों के भीतर वितरण दिया है छुआ है.एक सौर या चंद्र ग्रहण के बाद अशुद्ध अवधि गुजर जाने के बाद. पुरानी तुलसी माला जल अर्थात झील, तालाब, नदी, समुद्र आदि .. या एक पेड़ के नीचे की प्राकृतिक शरीर में गिरा दिया जाना चाहिए.
30. एक शादीशुदा औरत जो सेवा प्रदर्शन कर रहा है या ठाकुरजी दर्शन के लिए जा रहा है, उसके माथे पर बिंदी और चूड़ियाँ पहनना चाहिए. शादी के लक्षण पहने बिना ठाकुरजी उपस्थिति में जा रहे एक अपराध है.
31. पुरुष प्रदर्शन सेवा या एक ठाकुरजी दर्शन के लिए जा रहा लोगों पर एक तिलक माथे होगा. एक व्यक्ति जो हमेशा एक तिलक करता है उसे किसी का सामना नहीं किया है जो बाधाओं मृत्यु में परिवर्तित होती है क्योंकि प्रभु सर्वोच्च एक है. एक तिलक पहनने में, एक अपने आप शुद्ध और साथ ही अन्य. अशुभ स्थिति का वर्णन वेद में, यह कहा गया है कि यह अशुभ है एक आदमी के लिए एक तिलक के बिना अपने घर छोड़ दें.

32. तिलक एक कुमकुम या केशर के साथ किया जाना चाहिए,चन्दन पेस्ट या सिंदूर के साथ नहीं किया जाना चाहिए, एक तिलक प्रभु अच्छी किस्मत की निशानी है.
33. एक शुतक की अवधि के दौरान तिलक नहीं पहनना चाहिए. शुतक पूरा होने के बाद से शुद्ध तिलक आवेदन कर सकता है. (शुतक के दौरान तिलक चरणामृत के साथ ही लागू करना चाहिए). शुतक की अवधि के दौरान, प्रसाद नहीं लिया जा सकता.
34. संपत्ति से संबंधित सरकार सरकारी चिह्नों लगाती है और तुरंत सरकार को संबंधित के रूप में पहचानने योग्य हो जाता है. बुद्धिमान की तरह, वैष्णव प्रभु के कमल पैर के लिए समर्पित कर रहे हैं और माथे पर तिलक प्रभु का संकेत है, यह प्रदर्शित करता है कि एक अपनी आत्मा, शरीर, जीवन शक्ति, इंद्रियों, दिल आदि के हवाले कर दिया है .. पहनने से प्रभु के लिए. जब एक आईने में दिखता है और माथे पर तिलक देखता है, वह याद होगा कि सभी बातें हैं जो आत्मसमर्पण कर रहे हैं, प्रभु के हैं. कि बावा होने से, एक भगवदीय यह सभी गुणों को प्राप्त कर सकते हैं.'